Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बड़े घर की बेटी पारिवारिक विघटन की कथा

रीता मौर्य *

* शोधार्थिनी (हिंदी) महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना – आपका जन्म बनारस से चार मील दूर लमही गांव में सावन बदी 10, संवत् 1937 (31 जुलाई सन् 1880 ई0) शनिवार को हुआ था। पिता का नाम अजायब राय था। माता का नाम आनंदी देवी आप कायस्थ दूसरे श्रीवास्तव थे। आपके तीन बहने थीं। उनमें दो तो मर गयीं, तीसरी बहुत दिनों जीवित रहीं। उस बहन से आप 8 वर्ष छोटे थे। तीन लड़कियों के पीठ पर होने से आप तेंतर कहलाते थे। आपके दो नाम और थे – पिता का रखा नाम मुंशी धनपत राय, चाचा का रखा नाम मुंशी नवाब राय। माता-पिता दोनों को संग्रहणी की बीमारी थी। पैदा होने के दो-तीन साल बाद आपको जिला बांदा जाना पड़ा आपकी पढ़ाई पांचवें वर्ष शुरू हुई पहले मौलवी साहब से उर्दू पढ़ते थे। उन मौलवी साहब के दरवाजे पर सब लड़कों के साथ पढ़ने जाते थे आप पढ़ने में बहुत तेज थे। लड़कपन में आप बहुत दुर्बल थे आपकी विनोद प्रियता का परिचय लड़कपन से ही मिलता है। एक बार की बात है- कई लड़के मिलकर नाई-नाई खेल रहे थे। आपने एक लड़के की हजामत बनाते हुए बाँस की कमानी से उसका कान ही काट लिया। उस लड़के की माँ झल्लाई हुई उनकी माता से उलाहना देने आयी। आपने जैसे ही उसकी आवाज सुनी, खिड़की के पास दुबक गये। माँ ने दुबकते हुए उन्हें देख लिया था पकड़कर चार झापड़ दिये।

'बड़े घर की बेटी' प्रेमचंद द्वारा लिखित भारतीय संयुक्त परिवार पर आधारित है। इस कहानी की प्रमुख पात्र आनंदी है, लेकिन उसका विवाह मध्यम परिवार में हो जाता है। आनंदी एक बड़े कुल की लड़की थी। उसके पिता एक छोटी सी रियासत के ताल्लुकेदार थे। विशाल भवन, एक हाथी, तीन कुत्ते, बाज, झाड़-फानूस, जो एक प्रतिष्ठित ताल्लुकेदार के भोग्य पदार्थ हैं, सभी यहां विद्यमान थे। आनंदी अपने नये घर में आयी तो यहाँ का रंग-ढंग कुछ और ही देखा। जिस टीम-टाम की बचपन से ही, आदत पड़ी हुई थी, वह यहाँ नाम मात्र को भी ना थी। हाथी-घोड़ों का तो कहना ही क्या, क्यों सजी हुई सुंदर बहली तक न थी। इनकी कहानी में जहां एक ओर रूढ़ियों, अंधविश्वासों, और अंध परंपराओं पर कड़ा प्रहार किया गया है वहीं दूसरी ओर मानवीय संवेदनाओं को भी उभारा गया है। अपने जीवन काल में वे विभिन्न सुधारवादी और पराधीनता की स्थितिजन्य, नवजागरण प्रवृत्तियों से प्रभावित रहे, यथा आर्य समाज, गांधीवाद वामपंथी विचारधारा आदि।

प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य को निश्चित दिशा दी है। प्रेमचंद आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने अपने दौर में रहे, बल्कि किसान जीवन की उनकी पकड़ और समझ को देखते हुए उनकी प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। उनकी रचनाओं में गरीब श्रमिक, किसान और स्त्री, जीवन का सशक्त चित्रण उनकी दर्जनों कहानियों और उपन्यासों में हुआ है, सद्गति, कफन, पूस की रात, गोदान में मिलता है। साहित्यिक क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय है।

बड़े घर की बेटी कहानी में आनंदी पाव भर घी मांस में डाल देती है। घी खत्म हो जाता है, और दाल में घी न डालने पर देवर और भाभी में कहा-सुनी हो जाती है। इस बात को लेकर घर में विवाद शुरू हो जाता है और घर टूटने के कगार पर आ जाता है। लेकिन आनंदी कभी नहीं चाहती मेरा परिवार बिखर जाये। इसलिए देवर को माफ कर देती है। घर का माहौल पहले जैसा सौहार्द्रपूर्ण हो जाता है। सभी तारीफ करते हैं कि बड़े घर की बेटियां इसी तरह होती हैं। यदि कोई बात बिगड़ जाये तो बना लेती हैं। प्रेमचंद ने परिवार में विघटन को पहले ही पहचान लिया था। परिवार पहले ही टूट या बिखर जाये तो वह समाज के लिए ठीक नहीं है, और देश के लिए भी ठीक नहीं।

परिवार में यदि विघटन है तो परिवार में अकेलापन आ जाता है, व्यक्ति अकेलेपन से जूझता है, यदि परिवार में सभी मिलकर रहते हैं एक दूसरे का सहयोग करते हैं तो बड़ी से बड़ी मुसीबत पर विजय आसानी से पाया जा सकता है। परिवार में दादा-दादी, चाचा-चाची, बड़े पिताजी, बड़ी मां और परिवार के प्रत्येक सदस्य में प्रेम है तो बच्चे भी परिवार से अच्छे संस्कार और सहयोग की भावना सीखते हैं, बड़े बुजुर्गों का अदब करना, उनकी बात मानना, छोटों से प्रेम करना तथा परिवार में सहयोग करना यह सारे मूल्य बच्चे परिवार से सीखते हैं तो वह एक अच्छा नागरिक बनते हैं। एक अच्छा व्यक्तित्व समाज के लिए बहुत ही जरूरी है और देश के लिए भी। भारतीय संस्कार और भारतीय मूल्य एक बच्चे में डाला जाए तो वह बड़ा होकर एक आदर्श नागरिक बन सकता है जिससे स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण होगा प्रेमचंद ने बड़े घर की बेटी में यह दिखाने की कोशिश की है कि एक परिवार में घर को बनाने या बिगाड़ने में किसी स्त्री की कितनी बड़ी भूमिका होती है। स्त्री परिवार का केंद्र होती है परिवार में विघटन हुआ तो इसका असर समाज पर पड़ेगा। आजकल स्त्रियों को कुटुंब में मिलकर रहने की जो अरूचि होती है उसे वह जाति और देश दोनों के लिए हानिकारक समझते थे।

बड़े शहरों में संयुक्त परिवार नहीं रहते, जिससे व्यक्ति अकेले रहते-रहते तनाव में चला जाता है। लम्बे समय तक दवा खाने से दूसरी बीमारी का खतरा रहता है। तनाव का एक ही इलाज है खुशहाल परिवार। तनाव में रहने से नींद नहीं आना फिर सालों तक एलोपैथिक दवा खाना, फिर उसका साइड इफेक्ट, कोई दूसरी बीमारी हो जाना, फिर उसका इलाज लम्बे समय तक दवाईयां खाते रहना परेशान होकर आत्महत्या कर लेना यह बहुत बड़ी समस्या है।

सारी सुख-सुविधा पैसा, बंगला, गाड़ी रहते हुए भी सुकून नहीं जिंदगी खत्म कर लेना, इस बात को प्रेमचंद बहुत पहले ही भांप गये थे। आजकल नारियों में सहनशीलता नहीं रह गई है थोड़ा सा भी किसी ने कुछ कह दिया तो लड़ाई-झगड़ा शुरू हो जाता है।

प्रेमचंद ने कहानी में दिखाया है कि देवर लाल बिहारी ने कहा भईया (श्रीकंठ) से मेरा मुंह नहीं देखना चाहते, भाभी-भईया को प्रणाम कहना, आनंदी ने कहा मेरी सौगंध जो एक पग आगे बढ़ाया तो ईश्वर साक्षी है मेरे मन में तुम्हारे प्रति कोई मैल नहीं है श्रीकंठ का भी हृदय पिघल जाता है और भाई को गले लगाकर फूट-फूट कर रोने लगता है।

यह देखकर बेनी माधव सिंह खुश हो जाते हैं और कहने लगते हैं बड़े घर की बेटियां ऐसी ही होती हैं इस कहानी में प्रेमचंद ने भारत के संयुक्त परिवार के मनोविज्ञान को दिखाया है।

वर्तमान समय में भारतीय मूल्य को कम महत्व दिया जा रहा है। जिससे परिवार में विघटन होता जा रहा है। यदि परिवार में एक भाई आर्थिक रूप से सम्पन्न है या किसी बड़े पद पर है और दूसरा भाई कुछ नहीं है तो उसको अलग कर दिया जाता है। अपने लिए और अपने परिवार के लिए सब कुछ करना है स्वार्थ घेर लेता है भाई के साथ रहेंगे तो उसका भी परिवार देखना पड़ेगा। घर का बंटवारा हो जाता है, विभिन्न प्रकार की समस्याएं घेर लेती हैं। ईर्ष्या, द्वेष, कुटिल राजनीति घर में होने लगती हैं। भाई ही भाई के खून का प्यासा हो जाता है।

आनंदी दयालु है वह सोचती है मैं नहीं जानती थी कि बात इतनी बढ़ जायेगी। पति पर मन ही मन झुंझलाती है इस पर लाल बिहारी का कहना है कि भईया मेरा मुँह ना देख पाये इस पर आनंदी का रहा- सहा क्रोध भी चला जाता है, आनंदी रोने लगती है मन का मैल धोने के लिए नयन-जल से उपयुक्त और कोई वस्तु नहीं है। आनंदी माफ करके देवर को अपना घर बचा लेती है।

प्रेमचंद ने बताया है कि संयुक्त परिवार हुआ करता था, संवेदनाएं थी, प्रेम सहयोग था, एक दूसरे की जरूरत थी, परिवार एक साथ रहता था। पारिवारिक जीवन में कठिनाई क्यों आई, अवसाद क्यों आया यह ज्वलंत मुद्दाएं हैं। प्रेमचंद ने इन समस्याओं को सौ वर्ष पहले ही पहचान लिया था पारिवारिक विघटन को रोकना चाहिए। जब समाज में जीवन के मूल्यों को कम महत्व दिया जाने लगा तो पारिवारिक विघटन हुआ। समाज पर भी इसका प्रभाव पड़ा। हत्या, लूट, भ्रष्टाचार जो फैला है वह मूल्यों को छोड़ने के कारण ही है।

बड़े घर की बेटी में कहानीकार प्रेमचंद जी ने संयुक्त परिवार की समस्या को बड़ी कुशलता से चित्रित किया है। संयुक्त परिवार की मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा को संभालना आज एक बड़ी समस्या है। कुछ छोटी-छोटी बातों को नजर अंदाज कर दिया जाए तो संयुक्त परिवार एक आदर्श पारिवारिक व्यवस्था मानी जाती है। वर्तमान समय में संयुक्त परिवार बिखरता जा रहा है। घर की स्त्रियां अपनी सहनशीलता और सूझबूझ से बिखरते परिवार को संभाल सकती हैं और बड़प्पन की मिसाल पेश कर सकती हैं इस कहानी का उद्देश्य कहानी के अंत में निहित है। प्रेमचंद जी ने प्रदर्शित किया है कि कुलीन परिवार की विवेकशील स्त्री ससुराल में आपसी प्रेम तथा एकता बनाने में मुख्य भूमिका निभाती हैं।

प्रस्तुत कहानी में बड़े घर की बेटी ऐसी नहीं होती है कि आपस में झगड़ा करवाये या अपने अहम के भाव को देखे। बल्कि आनंदी जैसी होती है, जो अपने अहम् का त्याग करके लाल बिहारी को माफ कर देती है और उसे घर छोड़कर नहीं जाने देती। इसी कारण घर और समाज में भी उसकी प्रशंसा होती है। कहानी का उद्देश्य यह भी स्पष्ट करता है कि एकल परिवार किसी समस्या का हल नहीं है बल्कि संयुक्त परिवार हर समस्या का निवारण करता है इसलिए घर की शोभा एवं समाज की शोभा इसी में है कि भाई-भाई साथ रहें एक दूसरे का सुख-दुख बांटें।

बड़े घर की बेटी मुंशी प्रेमचंद जी द्वारा लिखित प्रसिद्ध कहानी है इस कहानी में उन्होंने संयुक्त परिवार में होने वाली, समस्याओं, कलहों बात का बतंगड़ बन जाने और फिर आपसी समझदारी बिगड़ती परिस्थिति को सामान्य करने का हुनर दर्शाया है। बड़े घर की बेटी में कहानीकार ने पारिवारिक मनोविज्ञान को बड़ी सूक्ष्मता से दिखाया है। बेनीमाधव सिंह, गौरीपुर के जमींदार हैं उनके बड़े पुत्र की पत्नी आनंदी देवर द्वारा खड़ाऊ मारने पर कोप भवन में चली जाती है और अपने पति से देवर की शिकायत करती है। श्रीकंठ क्रोधित होकर भाई का मुख ना देखने की कसम खाते हैं परिवार में क्लेश और झगड़ा देखने के लिए कई लोग हुक्का चिलम के बहाने घर में जुट आये। दु:खी लाल बिहारी घर छोड़कर जाने लगता है जाते-जाते भाभी से क्षमा मांग लेता है आनंदी का हृदय पिघल जाता है और अपने देवर लाल बिहारी को क्षमा कर देती है। दोनों भाई गले मिलते हैं और सब कुछ पहले की तरह सामान्य व आनंददायक हो जाता है। पहले बेनी माधव और फिर सारे गांव के लोग यही कहने लगे बड़े घर की बेटियां ऐसी होती ही हैं।

इस प्रकार लेखक का उद्देश्य यथार्थ के साथ एक आदर्श भी स्थापित करना भी है जो कि उन्होंने आनंदी के माध्यम से बड़े घर की बेटी में दिखाया है, आनंदी ने आपसी सौहार्द्रपूर्ण, धैर्य, सहनशीलता से रिश्तों को टूटने से बचाया है।

बड़े घर की बेटी कहानी का शीर्षक अत्यंत सार्थक है कहानी के केंद्र में आनंदी की प्रमुख भूमिका है। आनंदी भूप सिंह की बेटी है देखने में बहुत सुंदर है और गुणवान है। उसके पिता उसे बहुत प्यार करते हैं वह बचपन से ही धन-धान्य से परिपूर्ण माहौल में रही है, लेकिन विवाह के बाद श्रीकण्ठ के घर आने पर वह अलग वातावरण पाती है। उसने बड़ी समझदारी से ससुराल के सभी अभावों से समझौता कर लिया है उसके सद्व्यवहार के कारण परिवार का वातावरण सामान्य हो जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. प्रेमचंद घर में, शिवरानी देवी, पेज नं0 17, प्रकाशन, नई किताब प्रकाशन, 1/11829 ग्राउण्ड फ्लोर,पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032, प्रथम संस्करण : 2020 ISBN : 978-93-87187-65-8
2. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पेज नं0 368, पेज नं0- 369
3. प्रेमचंद की चर्चित कहानियां, भाग-2, पेज नं0 86
4. प्रकाशक सर्व सेवा संघ, राजघाट, वाराणसी।
5. HindiKunj.com
6. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, पेज नं0 373

****